

## रेपका, मील के पत्थर

1	भारत सरकार द्वारा पहिया व धुरा कारखाना परियोजना की संस्वीकृत की गई ।	जून /1978
2	भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा पहिया व धुरा कारखाना राष्ट्र को समर्पित ।	जून /1978
3	पूर्व माननीय रेल मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा आधारशिला रखी गयी ।	जनवरी/1980
4	पहली ईक्यूएस हीट टैप की गई ।	अक्तूबर /1980
5	प्रथम परीक्षण पहिया ढाला गया (BOXN)	अक्तूबर /1983
6	प्रथम परीक्षण धुरा फोर्ज किया गया ।	दिसंबर /1983
7	माननीय प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा पहिया व धुरा कारखाना का उद्घाटन ।	सितंबर/1984
8	पहला पहिया सेट एसेंबल किया गया (BOXN) ।	अक्तूबर /1984
9	प्रोत्साहन योजना लागू की गई ।	जनवरी/1990
10	प्रथम 915 मि.मी. व्यास का कोचिंग पहिया बनाया गया ।	मई/1993
11	प्रथम 915 मि.मी. व्यास का कोचिंग पहिया सेट बनाया गया ।	अगस्त /1993
12	मैसर्स बी वी क्यू आई द्वारा आई एस ओ 9002 प्रमाणीकरण का प्रत्यायन (आई एस ओ 9002 प्राप्त करने वाली पहली रेलवे इकाई)	नवंबर/1994
13	पहला 840मि.मी. व्यास का फ्लैट कंटेनर वैगन के पहिया का विनिर्माण किया गया ।	जनवरी/1995
14	840मि.मी. व्यास का पहला पहिया सेट बनाया गया ।	मार्च/1995
15	915मि.मी. व्यास का पहला वैगन पहिया बनाया गया ।	अक्तूबर /1995
16	मैसर्स किलोस्कर के लिए 6 लाख रुपये मूल्य का पहला गैर रेलवे आदेश का निष्पादन किया गया ।	सितंबर /1995
17	यू एस रेल रोड को आपूर्ति करने के लिए पहिया, धुरा के विनिर्माता के रूप में एएआर प्रमाणीकरण का प्रत्यायन ।	नवंबर/1995
18	915मि.मी. व्यास का पहला वैगन पहिया सेट बनाया गया ।	दिसंबर /1995
19	पहियों और धुरों का पहला प्रेषण अमेरिका को निर्यात किया गया । (कोचिंग-36 पहिए एवं प्र-श्रेणी धुरे)	दिसंबर /1995
20	1097 मि.मी. व्यास का पहला लोको पहिया बनाया गया ।	दिसंबर /1997
21	एक वर्ष में अधिकतम धुरों का निर्माण (52,249 नं.)	फरवरी /1997

22	5,00,000वाँ धुरा	मई/1998
23	आवर्धन चरण - I पूरा/पूर्ण	जुलाई/1998
24	किसी विशेष माह में अधिकतम पहियों का निर्माण (10,031 पहिए)	दिसंबर /1998
25	किसी विशेष माह में पहियों का न्यूनतम रिजेक्शन प्रतिशत (4.95%)	दिसंबर /1998
26	मार्च 1999में परीक्षण के तौर पर MoV ढलवाँ इस्पात पहिया के साथ प्रथम WDM2 लोको सं. 16464 को फिट किया गया ।	मार्च /1999
27	मैसर्स बी वी क्यू आई द्वारा आई एस ओ 14001 का प्रत्यायन (आई एस ओ 14001 प्राप्त करने वाली पहली रेल इकाई)	जून/1999
28	पहला एमजी कोचिंग पहिया बनाया गया ।	सितंबर/1999
29	आई एस ओ : 9001-2000 का प्रत्यायन । (आई एस ओ : 9001-2000 प्राप्त करने वाली पहली रेल इकाई)	मार्च /2001
30	एमओवी सामग्री मिश्रण से ढाला गया पहला एमजी लोको पहिया ।	नवंबर/2001
31	मैसर्स एचईआईएल/कोलकाता को 5280 कॉनकोर फ्लैट कन्टेनर वैगन के पहिया सेटों की आपूर्ति जो कि गैर रेलवे ग्राहक से प्राप्त 30 करोड़ रुपये मूल्य के उच्चतम अकेला आदेश था ।	मार्च /2002
32	मैसर्स ट्रान्सपोर्टेशन टेकनॉलजी सेंटर, यू एस ए में बीजी लोको पहियों का डिजाइन की वैधता ।	अप्रैल/2002
33	बीजी (1092 मि. मी. व्यास ) लोको पहिया को सवारी रेल इंजनों में चलाने के लिए आरडीएसओ से स्वीकृति ।	अप्रैल/2002
34	बीजी (1092 मि. मी. व्यास ) लोको पहिया में एमओवी से ढाले गए पहियों के नियमित प्रयोग के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा स्वीकृति ।	अप्रैल/2002
35	पधुका परियोजना की रजत जयंती ।	सितंबर/2002
36	पहला एमजी-डीईएमयू पहिया ढाला गया ।	जनवरी/2003
37	रेल पहिया कारखाना के रूप में पधुका का पुनः नामकरण ।	फरवरी/2003
38	रेपका कॉलोनी और अस्पताल के लिए आईएसओ 14001:1996 प्रमाणीकरण ।	मार्च/2003
39	ट्रेक्शन मोटर आर्मेचर शाफ्ट का पहला बैच रेलवे कर्मशालाओं को प्रेषित ।	सितंबर/2003
40	50,000वीं हीट टैप की गई ।	मार्च /2004
41	रेपका ने OHSASप्रमाणपत्र- 18001 प्राप्त किया ।	फरवरी/2005
42	किसी महीना विशेष में पहियों का न्यूनतम रिजेक्शन प्रतिशत (3.36%)	फरवरी/2007
43	10,00,000वां धुरा फोर्ज किया गया ।	मार्च /2008

44	75,000वीं हीट टैप की गई ।	मई /2009
45	54 ढले ईएमयू पहिया सेटों का विनिर्माण किया गया और दक्षिण रेलवे आवड़ी को जाँच परीक्षण हेतु प्रेषित किए गए ।	जून/2009
46	माइक्रो एलॉइड रासायनिक सम्मिश्रण वाले 24 एल एच बी पहियों को पहली बार परीक्षण के तौर पर ढाला गया ।	जून/2009
47	बूट प्रणाली के अधीन कारखाने में ही ऑक्सीजन संयंत्र चालू किया गया । भारतीय रेल में यह पहला प्रयोग था ।	फरवरी/2010
48	टी टी सी आई द्वारा 25 टन धुरा लोड पहियों के लिए डिजाइन की वैधता स्वीकृत की गई । इन पहियों को परीक्षण के लिए रायनपाडू, दमरे को प्रेषित किया गया ।	जून/2010
49	उच्च गति फिएट बाँगी के लिए 24 एल एच बी पहियों का निर्माण किया गया । ये पहिए उत्तर रेलवे के शालीमार एक्सप्रेस में फील्ड परीक्षण के अधीन है ।	सितंबर/2010
50	रेपका ने मार्च 2012 , दिनांक 30.03.2012 को ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है , अच्छे पहिए-2,00,000, मशीनी धुरा-1,00,000, पहिया सेट-70,000, फोर्ज धुरा-75,250, 1,00,000वीं हीट टैप की गयी ।	अप्रैल/2013
51	स्क्रेप की 100 प्रतिशत ई-नीलामी शुरू की गई ।	जून/2013
52	वैकल्पिक प्राथमिक स्क्रेप के रूप में रेल स्क्रेप का उपयोग । रेल स्क्रेप खपत में पहले के प्रति हीट 0.8 मिट्रिक टन की तुलना में 8 मिट्रिक टन की वृद्धि ।	मार्च /2012
53	शट डाउन अवधि को 21 दिनों से घटाकर 14 दिन कर दिए गए , जिसके फलस्वरूप आने वाले सभी वर्षों में कार्य दिवसों की संख्या 6 बढ़ गयी ।	फरवरी/2012
54	सालों से गड़े पड़े रहे लौह स्क्रेप को पुनः प्राप्त कर संचित किया गया ।	फरवरी/2012
55	1 लाख वीं हीट टैप की गई ।	अप्रैल/2013
56	15,00,000वां धुरा फोर्ज किया गया ।	दिसंबर/2014
57	रेपका को पुनः राजीव गाँधी राष्ट्रीय गुणवत्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया । (वर्ष 2012 में सम्मानित)	अक्तूबर /2015
58	रेपका को गुणवत्ता प्रबंधन के लिए स्वर्ण मयूर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।	अप्रैल/2015
59	K Class CTRB के लिए उपयुक्त 16 नंबर 25 टन धुरा लोड प्रोटोटाइप वैगनों को 40 दिनों में विकसित किया गया ।	जून/2015
60	दुग्ध टैंक वैगन और कोलकाता मेट्रो के लिए रेपका में पहियों का निर्माण किया गया । "मेक इन इंडिया" के एक हिस्सा के रूप में माननीय रेल राज्य मंत्री श्री राजेन गोहेन ने पहिया सेट	सितंबर/2016

का उद्घाटन किया।